

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीसीतालम्हणभरतशक्रहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे बाल्मीकीये आदिकार्ये सुन्दरकाण्डे

॥ त्रिचत्वारिंशः सर्गः ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ त्रिचत्वारिंशः सर्गः ॥

हनुमता चैत्यप्रासादस्य रिध्रंसस्तद्रक्षकाणां रक्षच

ततः स किङ्करान् हन्वा हनुमान् ध्यानमास्थितः।

रनं भग्नं मया चैत्यप्रासादो न रिनाशितः ॥ 5.43.1 ॥

तस्मात् प्रासादमद्वैरमिमं रिध्रंसयाम्यहम्।

इति सङ्क्षिप्त्य हनुमान् मनसादर्शयन् बलम् ॥ 5.43.2 ॥

चैत्यप्रासादमुत्प्लुत्य मेरुशृङ्गमिरोन्नतम्।

आरुरोह हरिश्रेष्ठो हनुमान् मारुताञ्जः ॥ 5.43.3 ॥

आरुह्य गिरिसङ्काशं प्रासादं हरियुथपः।

बभौ स सुमहातेजाः प्रतिसूर्य इरोदितः ॥ 5.43.4 ॥

सम्प्रधृष्य तु दुर्धर्षश्चैत्यप्रासादमुन्नतम्।

हनुमान् प्रज्वलन् लक्ष्म्या पारियात्रोपमोहभरं ॥ 5.43.5 ॥

स भून्वा सुमहाकायः प्रभारान् मारुताञ्जः।

धृष्टमास्त्रेफाटयामास लङ्कां शब्देन पूरयन् ॥ 5.43.6 ॥

तस्यास्त्रेफाटितशब्देन महता श्रोत्रघातिना।

पेतुरिहस्रमास्तत्र चैत्यपालाश्च मोहिताः ॥ 5.43.7 ॥

अस्त्ररिज्जयतां रामो लक्ष्मणश्च महाबलः।

राजा जयति सुग्रीरो राघवेणाभिपालितः ॥ 5.43.8 ॥

দাসোহহং কোসলেन्द्रস্য রামস্যাক্লিষ্টকর্মণঃ।  
হনুমান্ শক্রসৈন্যানাং নিহন্তা মারুতাত্মজঃ ॥ 5.43.9 ॥

ন রারণসহস্রং মে যুদ্ধে প্রতিবলং ভরেৎ।  
শিলাভিষ্চ প্রহরতঃ পাদপৈশ্চ সহস্রশঃ ॥ 5.43.10 ॥

ধর্ষযিৎরা পুরীং লঙ্কামভিরাদ্য চ মৈথিলীম্।  
সমৃদ্ধার্থো গমিষ্যামি মিষতাং সর্ৱরক্ষসাম্ ॥ 5.43.11 ॥

এরমুক্ছা মহাকাযশ্চৈত্যস্থো হরিয়ুথপঃ।  
ননাদ ভীমনির্হাদো রক্ষসাং জনযন্ ভযম্ ॥ 5.43.12 ॥

তেন নাদেন মহতা চৈত্যপালাঃ শতং যযুঃ।  
গৃহীৎরা রিরিধানস্তান্ প্রাসান্ খড্গান্ পরশ্রধান্ ॥ 5.43.13 ॥

রিসৃজন্তো মহাকাযা মারুতিং পর্যরারযন্।  
তে গদাভির্ৱিচিত্রাভিঃ পরিঘৈঃ কাঞ্চনাস্ৱদৈঃ ॥ 5.43.14 ॥

আজগুরানরশ্ৰেষ্ঠং বাণৈশ্চাদিত্যসন্নিভৈঃ।  
আরর্ত ইৱ গঙ্গাযাস্তোযস্য রিপুলো মহান্ ॥ 5.43.15 ॥

পরিক্ষিপ্য হরিশ্ৰেষ্ঠং স বভৌ রক্ষসাং গণঃ।  
ততো রাতাত্মজঃ ক্রুদ্ধো ভীমরূপং সমাস্থিতঃ ॥ 5.43.16 ॥

প্রাসাদস্য মহাংস্তস্য স্তম্ভং হেমপরিষ্কৃতম্।  
উৎপাটযিৎরা রেগেন হনুমান্ মারুতাত্মজঃ ॥ 5.43.17 ॥

ততস্তং ভ্রামযামাস শতধারং মহাবলঃ।  
তত্র চাণ্ডিঃ সমভৱৎ প্রাসাদশ্চাপ্যদহ্যত ॥ 5.43.18 ॥

দহ্যমানং ততো দৃষ্টৱা প্রাসাদং হরিয়ুথপঃ।  
স রাক্ষসশতং হৎৱা রজ্জ্বেণেন্দ্র ইৱাসুরান্ ॥ 5.43.19 ॥

অন্তরিক্ষস্থিতঃ শ্রীমানিদং রচনমব্রবীৎ।  
মাদৃশানাং সহস্রাণি রিসৃষ্টানি মহাত্মনাম্ ॥ 5.43.20 ॥

বলিনাং রানরেন্দ্রাণাং সুগ্রীররশরতিনাম্।  
অটন্তি রসুধাং কৃৎস্নাং রযমন্যে চ রানরাঃ ॥ 5.43.21 ॥

দশনাগবলাঃ কেচিৎ কেচিদ্ দশগুণোত্তরাঃ।  
কেচিন্নাগসহস্রস্য বভূবুস্তল্যরিক্রমাঃ ॥ 5.43.22 ॥

সন্তি চৌঘবলাঃ কেচিৎ সন্তি রাযুবলোপমাঃ।  
অপ্রমেঘবলাঃ কেচিৎ তত্রাসন্ হরিয়ুথপাঃ ॥ 5.43.23 ॥

ঐদৃগ্নিধৈস্ত হরিভির্ভূতো দন্তনখায়ুধৈঃ।  
শতৈঃ শতসহস্রৈশ্চ কোটিভিশ্চায়ুতৈরপি ॥ 5.43.24 ॥

আগমিষ্যতি সুগ্রীরঃ সরেষাং রো নিষুদনঃ।  
নেযমস্তি পুরী লক্ষা ন যুযং ন চ রারণঃ।  
যস্য ংরিক্ষ্‌রাকুরীরেণ বদ্ধং রৈরং মহাত্মনা ॥ 5.43.25 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামাযণে রান্মীকীযে আদিকাৰ্যে সুন্দরকাণ্ডে ত্রিচত্রারিংশঃ সর্গঃ ॥